दिनांक 13-09-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

विश्व-परिवर्तन ही ब्राह्मण जीवन का विशेष कर्तव्य है

बाप समान विश्व परिवर्तन के निमित्त बन जाओ
पहले स्वयं के परिवर्तन की तरफ कदम बढ़ाओ

अपने परिवर्तन की शक्ति को इतनी तुम बढ़ाना
एक सेकण्ड में अपनी स्मृति बदलकर दिखलाना

अपना स्वभाव संस्कार एक क्षण में बदल जाए
एक सेकण्ड में व्यर्थ बातें समर्थ में बदल जाए

पुरुषार्थ की रफ्तार भी पल भर में तीव्रता पाए
सेकण्ड में साकार से परमधाम के वासी हो जाए

स्व परिवर्तन में जब इतनी तीव्रता तुम लाओगे
विश्व परिवर्तन के योग्य तब ही तुम बन पाओगे

परिवर्तन का खेल संगमयुग में ही खेला जाता
परिवर्तन का बल ही तुम्हें सर्व प्राप्तियां कराता

केवल परिवर्तन की शक्ति बाप के समीप लाती
परिवर्तन शक्ति की कमी ही बाप से दूरी बढ़ाती

परिवर्तन का अभाव इच्छाओं का तूफान लाता
इसी कारण मंजिल का निशान दूर नजर आता

खुद को तुम्हें रखना है शिवशक्ति सदा बनाकर
वार करने वाला हर एक जाए तुमसे हार खाकर

फाइनल पेपर की खातिर कर लो अपनी तैयारी
स्व परिवर्तन करने में तुम लगाओ शक्ति सारी